अब कहो क्यों फरिस्ते, क्यों फना आखिरत।
भिस्त क्यों कर होएसी, क्यों होसी कयामत।। ६९ ।।

अब मोमिन कहते हैं कि फरिश्तों का बयान और आखिरत में ब्रह्माण्ड कैसे लय होगा? बहिश्तें कैसे मिलेंगी? कयामत कैसे होगी? बतलाओ।

ए सबे समझाए के, पाक करो हम दिल।
पीछे बात वतन की, हम पूछसी मोमिन मिल।। ७० ।।

यह सब बातें समझा करके हमारे दिल को पाक करो (संशय मिटाओ) इसके बाद हम सब मोमिन मिलकर घर की बातें पूछेंगे।

।। प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। १२९५ ।।

सनन्ध–फरिस्ते फना आखिरत भिस्त कयामत की

अब कहूं बिध नूरियों, जो जहां जिन ठौर।
ए माएने इमाम बिना, कोई करे जो होवे और।। १ ।।

अब नूरी फरिश्तों की बात करती हूं और उनके ठिकाने बताती हूं। इमाम साहब के बिना इसका भेद कोई नहीं बता सकता।

पांच फरिस्ते नूर से, खड़े मिने हुकम।
पाव पल में पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम।। २ ।।

अक्षर के हुकम के नीचे पांच फरिश्ते हैं। यह एक क्षण में कई ऐसे ब्रह्माण्ड बनाते हैं (असराफील जबराईल, अजाजील, अजराईल, मेकाईल)।

यामें एक रसूल संग, ए जो जबराईल।
सो नूर से आवत रूहन पर, हकें भेज्या रोसन वकील।। ३ ।।

इसमें एक रसूल साहब के साथ जबराईल फरिश्ता है जो अक्षर धाम से राजजी का सन्देश लेकर रूहों के पास आता है।

ए जो ले खड़े खेल को, और कहे जो चार।
ए असल कतरा नूर का, जिनको एह विस्तार।। ४ ।।

और बाकी जो चार फरिश्ते खेल के लिए खड़े हैं वह अक्षर के ही अंश हैं, जिन्होंने इतना बड़ा विस्तार बना रखा है।

यामें एक फरिस्ता, तिन से उपजे सब।
सरत आखिर असराफील, नूर से आया अब।। ५ ।।

इन चारों में एक फरिश्ता (अजाजील) है जिससे सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। एक जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील है जो अक्षर से अपने समय पर आया है।

अजाजील असराफील, इन दोऊ की असल एक।
पैदा अजाजील से, सो भी कहूं विवेक।। ६ ।।

अजाजील और असराफील दोनों एक धाम के हैं। अजाजील से सारी पृथ्वी की उत्पत्ति हुई है। उसका भी थोड़ा वर्णन करती हूं।

Nijanand App

कतरे से पैदा हुआ, इन से उपजे दोए।
तामें एक सबों को पालहीं, एक करत कबज रूह सोए।। ७ ।।

अजाजील के कतरे (बूंद) से दो फरिश्ते पैदा हुए (एक मैकाईल दूसरा अजराईल)। इनमें से एक सबको बनाता है, दूसरा सबको नष्ट करता है।

ए दोऊ जो पैदा हुए, सो ले खड़े सब छल।
नूर की नजरों चढ़े, तिनों आया सबों बल।। ८ ।।

जो यह दोनों पैदा हुए हैं, यही छल के बड़े मालिक हैं और अक्षर की नजर होने के कारण बड़े बलवान हैं।

यों चारों पैदा हुए, खड़े रहे जिन खातिर।
सोई काम सोई जाएगा, ए भी दोऊ देऊं खबर।। ९ ।।

यह चारों जो पैदा हुए हैं तथा जिनके लिए खड़े हुए हैं, उनके काम की और ठिकाने की थोड़ी-सी खबर देती हूं।

एक पैदा कर वजूद खेलावहीं, दूजा पाले तिन।
तीसरा किन किन लेवहीं, चौथा उड़ावे सबन।। १० ।।

एक पैदा कर खेल खिलाता है, दूसरा उनको पालता है और तीसरा उनको चुन-चुनकर ले जाता है (यह ब्रह्मा, विष्णु और शंकर हैं)। चौथा असराफील सारे ब्रह्माण्ड को समाप्त कर देता है।

यों नूर नजर चारों पर, इन बिध हुई पैदास।
फेर कहूं बेवरा इन का, ए जो खेलें खेल लिबास।। ११ ।।

इस तरह से इन चारों की पैदाइश अक्षर की नजर से हुई। अब इनका ब्योरा फिर से बताती हूं कि यह खेल में कैसा तन धारण करते हैं।

या विध उपजे नूर से, इन से सब विस्तार।
थिर चर चौदे तबकों, हुआ खेल कुफार।। १२ ।।

अक्षर के नूर से इस तरह से यह पैदा हुए और इनसे ही सारी सृष्टि का स्थावर जंगम (थिरचर) सब चौदह लोकों का झूठा खेल बना।

अजाजील को गफलतें, हुकमें दिया उलटाए।
ले तखत बैठाया छल के, सब फरेब जुगत बनाए।। १३ ।।

अजाजील को संशय होने के कारण हुकम ने उसे नीचे गिरा दिया और उसे इस माया के तख्त पर बैठा दिया। इसी से इसने सारे झूठे खेल बनाए।

अजाजील से फरिस्ते, उपजे बिना हिसाब।
सो दम सबों में इनका, ए जो खेलें मिने ख्वाब।। १४ ।।

अजाजील से ही बिना हिसाब सृष्टि पैदा हुई, इसलिए इस सपने के जीवों में अजाजील का अंश समाया है।

परदा इन सिरदार पर, ए जो कही जुलमत।
पीछा हटाया हुकमें, ताए कुफर सेवें कर सत।। १५ ।।

यहां के सिरदार नारायण पर निराकार का परदा है, इसीलिए दुनियां वाले इसे सत्य मानकर सेवा कर रहे थे। श्री राजजी के हुकम ने इस अज्ञानता के परदे को हटा दिया, ताकि जीव सत की पहचान कर सके।

Nijanand App

ले बैठा हुकमें साहेबी, जाकी असल कतरा नूर।
सो सरमाए के पीछा हट्या, अपना देख अंकूर।। १६ ।।

यह अजाजील फरिश्ता जो अक्षर के नूर से पैदा है, श्री राजजी के हुकम से ब्रह्माण्ड के ऊपर साहब बनकर बैठा है। उसने अब अपने मूल अंकूर (अक्षर) को पहचाना और शर्मिन्दा होकर पीछे हट गया।

इनसेती जो उपजे, तिन सिर दिया भार।
आप तिन से न्यारा रख्या, ए दोए भए सिरदार।। १७ ।।

इस अजाजील फरिश्ते से जो दो सिरदार (प्रधान) पैदा हुए, मैकाईल, अजराईल (ब्रह्मा, महादेव) उनके जिम्मे सारा कार्यभार सौंपकर स्वयं उनसे अलग हो गया।

एक दाना पानी घास सबको, मेकाईल बुध बल।
ठौर बैठा आप देवहीं, कर पसारा अकल।। १८ ।।

अब सबको दाना, पानी और घास देने का काम बुद्धि स्वरूप ब्रह्माजी पर आया जो अपने घर में बैठे-बैठे अपनी बुद्धि का ही खेल खिला रहे हैं।

जोर जालिम अजराईल, बैठा छल में हुकम ले।
फिरत दोहाई इन की, तले काफर खेलत जे।। १९ ।।

अजराईल भगवान शंकर हैं जो खेल में ताकतवर बनकर बैठे हैं। सब जगह पर काफिर लोग ही इनकी दुहाई देते हैं।

फरामोस सरूप अजराईल, मौत हुकम सिर सबन।
जिन वजूद धरया खेल में, आए लेत कौल पर तिन।। २० ।।

यह अजराईल (भगवान शंकर) सबके ऊपर झूठे ब्रह्माण्ड में मौत के रूप हैं। जिन्होंने संसार में तन धारण किया है, समय आने पर उनको मार देते हैं।

पाले मेकाईल इन को, रूह कबज करे अजराईल।
ए खेल समेत फरिस्ते, आखिर उड़ावे असराफील।। २१ ।।

ब्रह्माजी इनको पालते हैं और अजराईल इन जीवों को मारते हैं। इन सबका खेल समेत असराफील फरिश्ता महाप्रलय कर देता है।

ला हवा से तेहेतसरा लग, ए सब खेल में पातसाह एक।
कहे या बिन और कोई नहीं, एही है एक नेक।। २२ ।।

निराकार से पाताल तक पूरे खेल में यही एक शहंशाह है। इसके बगैर और कोई दूसरा नहीं है। यही एक सब पर हुकूमत करता है।

और जो इनके तले, ठकुराइयां कहावत।
देखाए दुनी को साहेबी, अपने तले ल्यावत।। २३ ।।

इसके नीचे जितने भी हैं यह सब ठाकुर (देवता, देवियां) और ठकुराईयां (स्वामीपना) कहलाते हैं, अर्थात् देवी-देवता दुनियां को इस तरह से अपनी साहेबी दिखाकर अपनी हुकूमत के तले रखते हैं।

एक दूजे के गुमास्ते, वजीर वकील दिवान।
एक फरिस्ता सबका खावंद, यों खेल बन्या सब जहान।। २४ ।।

वजीर, वकील और दीवान की तरह सभी देवी-देवता उसी एक के नौकरों की तरह हैं। यह एक फरिश्ता असराफील सबका मालिक है। इस तरह से सारा संसार बना है।

Nijanand App

यामें बुजरक आलम आरफ, तिन करियां कई किताब।
इन सिर हक एक मलकूत, चौदे तबकों लेत हिसाब।। २५ ।।

दुनियां के बीच बड़े-बड़े ज्ञानी (अगुए) हुए जिन्होंने कई किताबें लिखीं। उनके मन में सबसे ऊपर बैकुण्ठ का एक फरिश्ता (भगवान विष्णु) है जो चौदह तबकों (लोकों) का हिसाब लेता है।

ब्रह्मा सिव या देव जन, कई दुनियां तिन सेवक।
सो कहे ए सुख देवहीं, खैंचे अपनी तरफ खलक।। २६ ।।

ब्रह्माजी, शिवजी और देवी-देवता और सब दुनियां के लोग इन्हीं के सेवक हैं। यह सब अपने मुख से कहते हैं कि सुख देने वाले भगवान विष्णु ही हैं। इस तरह से दुनियां को अपनी तरफ खींचते हैं।

करे पातसाही खेल में, ऐसी कर बंदोबस्त।
देत काफरों दोजख, बंदों कदमों चार भिस्त।। २७ ।।

भगवान विष्णु इस तरह इन्तजाम कर खेल के बादशाह बने हैं। यह काफिरों को दोजख तथा भक्तों को चार किस्म की मुक्ति (सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य) देकर अपने चरणों में रखते हैं।

जिन हक बका अर्स न पाइया, तिन खुदा हवा या मलकूत।
सो कटे पुलसरात में, जिन पकड़े वजूद नासूत।। २८ ।।

जिनको अखण्ड परमधाम और राजजी की पहचान नहीं हुई, उनके खुदा भगवान विष्णु या निराकार हैं। ऐसे लोग कर्मकाण्ड की तलवार की धार में कटते हैं, मरते हैं और फिर मृत्युलोक में ही तन धारण करते हैं।

सो ले न सके भिस्त कदमों, तिन अरवाहों देत दोजख।
और हिसाब सुख दुख हैं कई, ए खेल कह्यो चौदे तबक।। २९ ।।

जिन जीवों को भगवान विष्णु अपने चरणों में नहीं लेते उनको नरक (दोजख) देते हैं। इस तरह से चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में कई तरह से दुःख-सुख हैं।

ए जो खेल पैदा की सब कही, इनों सिर अर्स मलकूत।
ला मकान जिमी तहेतसरा, ए सब फना तले जबरूत।। ३० ।।

जो सृष्टि की पैदाइश बताई है उनका धाम बैकुण्ठ है और निराकार से पाताल तक यह सब अक्षर की नजर के तले मिट जाने वाला है।

ए जो तले ला हवा के, जो खेल कह्या फना।
इनों सुध ना जबरूत लाहूत, ए बका वह सुपना।। ३१ ।।

निराकार के नीचे का ब्रह्माण्ड सब नाशवान् है। यहां के रहने वालों को अक्षर और अक्षरातीत के धाम की सुध नहीं है, क्योंकि अक्षर और अक्षरातीत अखण्ड हैं और संसार सपने का है।

लोक जिमी आसमान के, सुरिया न उलंघत।
कह्या चौदे तबक का पलना, बीच हवा के झूलत।। ३२ ।।

चौदह तबकों के लोग ज्योति स्वरूप को ही नहीं लांघ पाते। यह चौदह तबकों (लोकों) का ब्रह्माण्ड निराकार के अन्दर झूले की भांति झूल रहा है।

Nijanand App

चार लाख कोंम आजूज माजूज, ए जो आवे जाए रात दिन।
गिनती कौल पूरा कर, आखिर एही काल सबन।। ३३ ।।

आजूज-माजूज (दिन और रात) की चार लाख कौम कही हैं। यह रात-दिन आते-जाते हैं। यह अपनी गिनती पूरी करके ब्रह्माण्ड को खा जाएंगे, अर्थात् महाप्रलय हो जाएगा।

जबरूत लाहूत अर्स कहे, देवें रूह अल्ला हकीकत।
ए बका मता दोऊ अर्सों का, सो महंमद पे मारफत।। ३४ ।।

अक्षर धाम और परमधाम ईश्वरी सृष्टि और ब्रह्मसृष्टि के अर्श कहे गए हैं। इनकी जानकारी श्यामाजी महारानी (रूह अल्लाह) देते हैं। यह दोनों घर ही अखण्ड हैं। इनकी पूरी पहचान मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की वाणी से मिलती है।

रूहें अर्स अजीम की, फौज असराफील फरिस्तन।
दोऊ गिरो उतरी दोऊ अर्सों से, खेल फरिस्तों का देखन।। ३५ ।।

रूहें परमधाम की हैं। असराफील की फौज (ईश्वरी सृष्टि) है। दोनों जमात दो अर्शों से तीन फरिश्तों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) द्वारा रचित खेल देखने के लिए आई हैं।

पेहेले कही सब खेल की, और कहे देखनहार।
रूहें फरिस्ते खेल देखहीं, पकड़ ख्वाब आकार।। ३६ ।।

पहले भी खेल की और देखने वालों की हकीकत बताई है। रूहें और फरिश्ते सपने के तन धारण करके खेल देख रहे हैं।

अजाजील खेल खावंद, ए भी न्यारा रह्या सबन।
ए खेल कुफार इन भांत का, तो ऐसा किया इन।। ३७ ।।

खेल का मालिक अजाजील इन सबसे अलग है। इसने इस तरह से झूठा खेल बनाया है।

ऐसी छोड़ साहेबी अजाजील, पीठ दई आप बचाए।
ए खेल ऐसा कुफार का, बिना काजी कौन बताए।। ३८ ।।

अजाजील फरिश्ता अपनी साहेबी छोड़कर किनारे होकर बैठे हैं। इस तरह का झूठा खेल है जिसकी हकीकत काजी श्री प्राणनाथजी के बिना कौन बताएगा ?

मोमिनों को देखलावने, किया खेल कुफार।
अब जो अर्स रूहें होवहीं, सो क्यों चलें इन लार।। ३९ ।।

मोमिनों को खेल दिखाने के लिए यह झूठा खेल बनाया है। जो रूहें परमधाम की होंगी इन जीवों के रास्ते पर कैसे चलेंगी ?

खेल कुफार इन भांत का, सब खेलें हक बका भूल।
इनमें फुरमान ल्याइया, मेरे मासूक का रसूल।। ४० ।।

यह झूठा खेल इस तरह का है जिसमें सभी (ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी सृष्टि) आकर भूल गई हैं। इन्हीं के वास्ते श्री राजजी के रसूल कुरान ले करके आए।

आया रसूल पुकारता, राह सीधी बका वतन।
ए माएने कौन लेवहीं, बिना अर्स रूह मोमिन।। ४१ ।।

रसूल साहब घर का सीधा रास्ता बताते हैं, परन्तु अर्श की रूहों के सिवाय उस रास्ते को लेता कौन है ?

Nijanand App

हम उतरे लैलत-कदर में, मांहें उरझे खेल कुफार।
दसों दिस हम ढूंढ़िया, पर काहूं न पाइए पार।। ४२ ।।

हम रूहें लैल-तुल-कदर की रात्रि में खेल में आए और इस झूठे खेल में उलझ गए। दसों दिशाओं में ढूंढ़ा पर इस ब्रह्माण्ड का पार नहीं मिला।

रसूलें हम वास्ते, मुनारे मुल्लां चढ़ाए।
जिन कोई मोमिन भूलहीं, ठौर ठौर पुकार कराए।। ४३ ।।

हमें सुध देने के लिए रसूल साहब ने मुल्ला को मीनारों पर चढ़ाकर बांग देने का नियम बनाया तथा हर ठिकाने पर आवाज लगवाई जिससे कोई मोमिन भूले नहीं।

कोई भूली राह बतावहीं, ताए बड़ा सवाब।
ढिंढोरा फिराइया, कर कर एह जवाब।। ४४ ।।

यदि कोई भूले को रास्ता बताता है तो उसका बड़ा पुण्य है। इस बात की सब जगह ढोल पीटकर जानकारी दी।

हम ढूंढ़ ढूंढ़ कुफार में, गए जो तिनमें भूल।
ऐसे मिने खसम के, पाए दसखत हाथ रसूल।। ४५ ।।

इस झूठे संसार में हम भी ढूंढ़ते-ढूंढ़ते भूल गए थे। इस बीच में (मेरते में) हमें श्री राजजी महाराज की हस्तलिखित चिट्ठी कुरान रसूल साहब के हाथ (द्वारा) मिली।

इन फुरमान में इसारतें, लिखियां जो खसम।
निसान अर्स अजीम के, पाए हमारे हम।। ४६ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान के अन्दर जो इशारतें लिखी हैं, वह हमारे अर्श की बातें थीं। हमने इसे प्राप्त किया।

हम ढूंढ़ें हक वतन, और रसूल ढूंढ़ें हम।
यों करते सब आए मिले, मोमिन रसूल खसम।। ४७ ।।

हम श्री राजजी महाराज और वतन (घर) को ढूंढ़ रहे हैं और रसूल साहब हमको ढूंढ रहे हैं। ऐसे ढूंढ़ते-ढूंढ़ते श्री प्राणनाथजी के पास आकर दोनों मिल गए।

सुनो मोमिनों बेवरा, ए जो आपन देख्या खेल।
जो तीनों देखे आलम, उतर के मांहें लैल।। ४८ ।।

हे मोमिनो! हमने जो खेल देखा है उसकी हकीकत सुनो। तीन ब्रह्माण्ड हमने रात्रि में उतरकर देखे हैं।

हकें बचाए कोहतूर तले, तोफान हूद महत्तर।
दूसरे तोफान नूह के, बचाए किस्ती पर।। ४९ ।।

पहले ब्रह्माण्ड में हूद-तोफान (इन्द्र-प्रकोप) आया और कोहेतूर (गोवर्धन पहाड़) के तले श्री राजजी महाराज ने बचाया। दूसरा नूह-तोफान (ब्रज से रास में जाने पर) योगमाया में किश्ती पर बिठाकर रूहों को बचा लिया।

साल हजार पीछे रसूल के, मांहें उतरे लैलत-कदर।
हुआ अर्स बका दिन जाहेर, सदी अग्यारहीं के फजर।। ५० ।।

रसूल साहब के एक हजार वर्ष बाद हम सम्वत् १६३८ में लैल (रात) में उतरे। इसमें अखण्ड घर की पहचान हुई और ग्यारहवीं सदी में (१७३५ में) सवेरा हुआ, ज्ञान आ गया।

Nijanand App

एही फरदा रोज कयामत, जो कही हजरत।
सो ए हुए सबे जाहेर, जिनको दुनी ढूंढ़त।।५१।।

हजरत रसूल साहब ने 'कल के दिन कयामत होगी' कहा था। यह कल का दिन ही ग्यारहवीं सदी है (हजार साल दुनियां के खुदा का एक दिन और सौ साल की रात्रि)। वह रात्रि जिसे दुनियां ढूंढ़ रही है, वह सबके लिए जाहिर हो गई।

सीधी राह वतन की, अब लों न पाई किन।
पैगंमर ना फरिस्ते, ना अहंमद मेंहेदी बिन।।५२।।

घर की सीधी राह मेंहदी श्री प्राणनाथजी के बिना पैगम्बर या फरिश्तों किसी ने नहीं पाई थी।

खेल फरिस्ते अर्स बका, हक मता पाया हम सब।
आखिर भिस्त कयामत, ए कजा कहिए अब।।५३।।

हमने श्री राजजी महाराज का सारा भेद, अखण्ड घर तथा इस खेल की सारी हकीकत को जान लिया है। अब आखिरत में सबको बहिश्तों में कायम करेंगे। इसको कजा कहते हैं (न्याय करना कहते हैं)।

ए कहूं फना पेहेले जिन विध, होसी इन आखिरत।
ज्यों पावें सुख भिस्त में, उठ के रूह कयामत।।५४।।

यह ब्रह्माण्ड आखिरत में फना कैसे होगा, पहले यह कहती हूं। फिर जीव बहिश्तों में कैसे कायम होकर सुख पाएंगे, वह कहूंगी।

ए कजा हुई दुनियां मिने, खोले हकीकत मारफत।
तिन मता बका अर्स का, जाहेर करी न्यामत।।५५।।

हकीकत और मारफत के भेद खोल करके दुनियां का न्याय होगा। इससे अखण्ड घर की सारी हकीकत की जानकारी सबको हो जाएगी।

बका सूरत पर बंदगी, करी इमामें इमामत।
दोऊ अर्स बताए दोऊ गिरोह को, करी महंमद सिफायत।।५६।।

अखण्ड परमधाम में विराजमान पारब्रह्म अक्षरातीत की पूजा श्री प्राणनाथजी ने कराई। दो जमात ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी सृष्टि को परमधाम और अक्षर धाम की पहचान कराई। जिसकी सिफायत (सिफारिश) रसूल साहब ने की थी।

ए नूर कजा का या विध, जिन टाली फेर अंधेर।
जो न राखूं ले हुकम, तो भोर होत केती बेर।।५७।।

न्याय के दिन की हकीकत जाहिर होने पर अज्ञानता का चक्कर मिटा दिया। यह श्री राजजी महाराज के हुकम से ही ब्रह्माण्ड खड़ा रहा। नहीं तो कभी का सवेरा हो गया होता।

कयामत काजी मोमिनों, पेहेले होसी जब।
फैलसी नूर आलम में, काजी कजा का सब।।५८।।

मोमिनों और काजी (श्री प्राणनाथजी) की पहचान पहले दुनियां को होगी, तब इस बात का फैलाव दुनियां में होगा, फिर काजी सबका न्याय करेंगे।

Nijanand App

ए किरने कौन पकरे, इन नूरै के आवाज।
करत ए सब खसम, अर्स अरवाहों काज।।५९ ।।

इस तारतम वाणी की किरणों को कौन पकड़ेगा? अर्श की रूहों के कार्य के लिए यह श्री राजजी महाराज की आवाज है।

काजी कजा के नूर की, बजसी कई करनाल।
नूर अकल असराफील, बजाए स्वर रसाल।।६० ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज जिस दिन न्याय के तख्त पर विराजमान होंगे, उस दिन तारतम वाणी के ज्ञान के बिगुल बजेंगे, अर्थात् सब मोमिन वाणी का शोर मचा देंगे, जाहिर कर देंगे। उसके बाद असराफील जागृत बुद्धि बड़ी जोर से मीठे स्वर में वाणी गाएगा।

कई करोर करनाइयां, कई करोर निसानों घोर।
यों गरज्या आलम में, सो कह्या न जाए सोर।।६१ ।।

न्याय के दिन कई करोड़ों करनाई (तुरही), नगाड़े बजेंगे और खुशियां मनाई जाएंगी। इस तरह से तारतम वाणी की आवाजें आलम (दुनियां) में फैलेंगी। इसका वर्णन शब्दों में नहीं होता।

याही सब्द के सोर से, पेहेले उड़सी इंड अंधेर।
कुदरत बुरका गफलत, उड़ाया फरिस्तों फेर।।६२ ।।

इस तारतम वाणी के शोर से संसार का अज्ञान उड़ जाएगा। फिर माया का परदा उड़ जाएगा और देवी देवताओं का चक्कर, जन्म-मरण समाप्त हो जाएगा।

आकास जिमी जड़ मूल से, पहाड़ आग जल वाए।
फिरया कतरा नूर का, और दिया सब उड़ाए।।६३ ।।

पांच तत्व का ब्रह्माण्ड और देवी-देवताओं की पूजा जो लोगों के लिए पहाड़ के समान है, जड़ (मूल) से उखड़ जाएगी। तारतम वाणी की एक बूंद ने सबको उड़ा दिया।

इन घाव के पड़घाव से, उड़सी चौदे तबक।
और आवाज के नूर से, बैठे भिस्त में कर हक।।६४ ।।

इस असराफील की वाणी के शोर से चौदह तबकों (लोकों) के संशय मिट जाएंगे और दूसरी बार असराफील के स्वर फूंकने से सब जीवों को बहिश्तों में कायमी मिल जाएगी।

पेहेले दिए सब उड़ाए के, चौदे तबक दम जे।
काजी कजा के नूर से, भिस्त में बैठे नूर ले।।६५ ।।

पहले चौदह लोकों को समाप्त कर दिया जाएगा। फिर न्यायाधीश की कृपा से इनको योगमाया में अखण्ड कर दिया जाएगा।

क्यों बरनों सुख भिस्त के, हो बैठे नूरी नेहेचल।
रेहेमत इन रेहेमान की, रच दिया और मंडल।।६६ ।।

जहां इन जीवों के अखण्ड तन बैठे होंगे उन बहिश्तों के सुख का वर्णन कैसे करें? पारब्रह्म की कृपा से ही इनके लिए नए ब्रह्माण्ड (बहिश्तें) बनाए गए।

Nijanand App

अपने अपने ताएफें, अरवाहें मिली सब धाए।
महंमद मेंहेदी की मेहेर से, भिस्त में बैठे आए।।६७।।

अपनी-अपनी जमातों में सब जीव दौड़ेंगे और मुहम्मद मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) की कृपा से बहिश्तों में कायमी मिलेगी (अखण्ड हो जाएंगे)।

पेहेले सब फना कर, उठाए लिए ततखिन।
साफ किए सब नूर ने, यों भिस्त भई वतन।।६८।।

सबसे पहले ब्रह्माण्ड प्रलय कर फिर से जीवों को उठाएंगे और तारतम वाणी के ज्ञान से निर्मल कर सबको बहिश्तों में कायमी देंगे।

निमख में नूर नजरों, उठे अंग उजास।
बरस्या नूर सबन में, कायम सुख में बास।।६९।।

अक्षर ब्रह्म के एक पल में ही तारतम ज्ञान के नूर से सब पाक साफ हो जाएंगे। ब्रह्मसृष्टि के नूर की (ज्ञान की) वर्षा होगी और फिर सबको अखण्ड सुख दे दिए जाएंगे।

ए कायम नूर नजर की, सिफत या जुबां कही न जाए।
पाक हुए सब खेलहीं, जरा खतरा न पाइए ताए।।७०।।

अक्षर की नजर में सबको कायम होने की सिफत (विशेषता) इस जुबां से वर्णन करने में नहीं आती। जहां सब तारतम वाणी से पाक होकर खेलेंगे। वहां नाश होने का खतरा नहीं होगा।

खाना पीना दिल चाहता, सब बिध का करार।
नूर सरूपें होए के, भिस्त में बसें नर नार।।७१।।

बहिश्तों के अन्दर खान-पान, रहन-सहन की सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी। जहां पर नए तन धारण कर जीव आनन्द लेंगे।

रूप रंग सब नूर के, गुन अंग इन्द्री नूर।
वस्तर भूखन नूर सबे, नूरै दिए अंकूर।।७२।।

वहां का रूप, रंग, गुण, अंग, इन्द्रियां, आभूषण, वस्त्र, तन सब नूरमयी होंगे।

मेवा मिठाई सेज सुख, सकल बिध भर पूर।
इस्क सबों में अति बड़ा, दिल हिरदे नूर हजूर।।७३।।

बहिश्तों के अन्दर मेवा, मिठाई और सेज्या के सुख, सब तरह के भरपूर हैं। इन सबमें बहुत इश्क होगा और दिल में धनी का स्वरूप विराजमान होगा।

या भिस्त में इन सुख को, केतो कहूं विस्तार।
दिल चाह्या सब पावहीं, सब बिध सुख करार।।७४।।

इस तरह से बहिश्तों के सुखों का वर्णन कहां तक करें? वहां मन की चाही चीजें तथा आराम मिलेगा।

लागी बरखा नूर की, चौदे तबक चौफेर।
अंतर मांहें बाहेर, कहूं पैठ न सके अंधेर।।७५।।

चौदह लोकों में चारों तरफ तारतम ज्ञान की वर्षा हो रही होगी जिससे अन्दर-बाहर कहीं भी अज्ञानता नहीं होगी।

Nijanand App

चौदे तबक नूरने, फेर किया मंडल।
खेल चाल दिल चाहते, नूर अरवा नूर बल।।७६ ।।

अक्षर ब्रह्म चौदह तबकों (लोकों) का ब्रह्माण्ड नया बनाएगा। वहां पर फिर अपनी इच्छानुसार सुख मिलेंगे। वहां पर सब नूरी तन होंगे और शक्ति भी नूरी होगी।

सुन्य चाही तिन सुन्य दई, भिस्त चाही तिन भिस्त।
नूर चाह्या तिन नूर दिया, यों पाई अपनी किस्त।।७७ ।।

उस नूरी ब्रह्माण्ड में जिसने शून्य चाहा उसे शून्य, जिसने बहिश्त चाही उसे बहिश्त और ईश्वरी सृष्टि को अक्षरधाम, अर्थात् हर एक को अपना-अपना ठिकाना मिला।

मात हुई मात चाहते, बुध बाबा आलम।
मन चाह्या सबको दिया, अर्स रूहों के खसम।।७८ ।।

तारतम वाणी के मालिक श्री प्राणनाथजी के आने से अन्धकार का नाश हो गया। मान चाहने वाले दुनियां के अगुओं ने अपनी हार मानी। अर्श की रूहों के मालिक ने सबको मनचाहे फल दिए।

मोमिन रूहें कदमों लिए, फरिस्ते नूर समाए।
तीसरे सारे भिस्त में, सो बैठे नूर की छांए।।७९ ।।

मोमिनों को अपने चरणों में लिया, ईश्वरी सृष्टि को अक्षर दिया, तीसरी जीव सृष्टि को बहिश्तों में योगमाया में बिठाया।

भिस्त भी बरकत मोमिनों, दई दुनियां को अविनास।
पर सुख बड़े मोमिन के, लिए कदमों अपने पास।।८० ।।

दुनियां के लोगों को मोमिनों की कृपा से बहिश्त के अखण्ड सुख मिले, परन्तु मोमिनों को, जिनको अपने चरणों में लिया है, उनके सुख सबसे अधिक हैं।

पैदास कतरे नूर की, ए जो हुई चल विचल।
फेर समेत समानी नूर में, सो नूर सदा नेहेचल।।८१ ।।

अक्षर के नूर के एक कतरे (बूंद) की शक्ति से जिससे क्षर ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई थी, वह शक्ति फिर अक्षर में समा गई, क्योंकि वह सदा अखण्ड है।

असराफील बुध नूर की, ए जो आई काजी हजूर।
सो नूर में जाए झिल मिली, ऐसी हुई कजा के नूर।।८२ ।।

जागृत बुद्धि असराफील काजी श्री प्राणनाथजी के पास आई। वह भी अपना प्रकाश फैलाकर वापस अपने स्थान चली जाएगी। कजा के नूर से ऐसा फैसला होगा।

उड़ाया कतरा नूर का, सो जाए रह्या मिने नूर।
फेर नजर करी भिस्त पर, हुई रोसन भर पूर।।८३ ।।

अक्षर के नूर का कतरा (बूंद) अजाजील फरिश्ता ब्रह्माण्ड की समाप्ति पर अपने मूल तन में वापस जाएगा। फिर बहिश्त में अखण्ड किए गए ब्रह्माण्ड पर जब अपनी नूरी नजर डालेगा तो सारा ब्रह्माण्ड जगमगा उठेगा।

Nijanand App

कजा हुई सबन की, पर मोमिन बड़े अंकूर।
इन को खेल देखाए के, लिए कदमों अपने हजूर।। ८४ ।।

सबको न्याय देने के बाद मोमिन को खेल दिखाकर अपने चरणों (परमधाम) में ले जाएंगे।

यों कजा करी सबन की, बांट दिए सब ठौर।
ए सुध इन काजी बिना, कोई देवे जो होवे और।। ८५ ।।

इस तरह सबका न्याय करके सबको अपने-अपने ठिकाने भेज दिया। ऐसा सुख श्री प्राणनाथजी के बिना और कौन दे सकता है?

काजी कजा करके, ले उठसी रूह मोमिन।
पेहेले ए कयामत होएसी, पीछे अरवाहें सबन।। ८६ ।।

इस तरह से श्री प्राणनाथजी सबको न्याय देकर रूह मोमिनों के साथ परमधाम में उठेंगे। पहले मोमिन को अखण्ड तनों में उठाया जाएगा। पीछे सब संसार के जीवों को बहिश्तें मिलेंगी।

माएने इन कुरान के, या जाहेर या बातन।
दई सबों को हैयाती, खोल के इलम रोसन।। ८७ ।।

कुरान के जाहिरी या बातूनी अर्थों का रहस्य श्री प्राणनाथजी खोलकर ज्ञान का उजाला करेंगे और उसके बाद सबको अखण्ड करेंगे।

कुदरत की सारी कही, बुरका जो गफलत।
दोजख भिस्त फरिस्ते, आखिर कही कयामत।। ८८ ।।

पहले मूल प्रकृति की, फिर चौदह लोकों के ऊपर निराकार के पड़े आवरण की और फिर दोजख और बहिश्त की हकीकत बताई और आखिर में ब्रह्माण्ड कैसे कायम होगा, बताया।

ए सब्द तो लों कहे, जो लों आए जुबांए।
सब्द न अब आगे चले, आवे नहीं कजाए।। ८९ ।।

महामतिजी कहती हैं कि जब तक मेरी जबान से धनी कहलवाते रहे, तब तक मैंने इन शब्दों को कहा। अब आगे बताने की शक्ति इस जबान में नहीं है, इसलिए न्याय के दिन की बाबत और क्या कहें?

आखिर हुई इन जिमी, इन जिमी आया कागद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द।। ९० ।।

हिन्दुस्तान की इस धरती के ऊपर तारतम वाणी आई। अब तुम इस ब्रह्माण्ड के शब्दों में मत उलझो (भूलो)। उसका वर्णन यहां के शब्दों से नहीं हो सकता।

इन जिमी में महंमद, होए आया कासद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द।। ९१ ।।

इसी जमीन पर रसूल साहब कासिद (डाकिया) बनकर आए हैं, इसलिए तुम इस ब्रह्माण्ड के शब्दों में मत उलझो (भूलो)। यहां के शब्दों से मुहम्मद साहब की पहचान नहीं हो सकती।

ल्याए ल्याए रूहों पिलावहीं, इस्क प्याले मद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द।। ९२ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज रूहों को इश्क के प्याले ला-लाकर यहां पिला रहे हैं, इसलिए तुम इस ब्रह्माण्ड के शब्दों में मत उलझो (भूलो)। यहां के शब्दों से श्री प्राणनाथजी की महिमा नहीं कही जा सकती।

Nijanand App

करी कजा चौदे तबकों, उड़ाए दई सब हद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द॥ ९३ ॥

यहां पर पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी महाराज न्यायाधीश (काजी) बनकर आए और चौदह लोकों को जन्म और मरण से छुड़ाकर अखण्ड कर दिया, इसलिए तुम इस ब्रह्माण्ड के शब्दों में मत उलझो (भूलो)। यहां के शब्दों से प्राणनाथजी की महिमा नहीं कही जा सकती।

नूर अकल असराफील, ले पोहोंच्या पार बेहद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द॥ ९४ ॥

अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि असराफील फरिश्ते ने यहां आकर सारे ब्रह्माण्ड को बेहद योगमाया में जागृत बुद्धि से अखण्ड कर दिया, इसलिए तुम इस ब्रह्माण्ड के शब्दों में मत उलझो (भूलो) यहां के शब्दों से असराफील, अक्षर की जागृत बुद्धि की महिमा नहीं हो सकती।

नूर इन आखिर का, और रोसन काजी सुभान।
क्योंकर इन जुबां कहूं, रसूल नूर फुरमान॥ ९५ ॥

आखिरत के समय में कायमी का, काजी के कजा करने का तथा फरमान लाने वाले रसूल के नूर का यहां की जबान से बयान कैसे करूं?

काजी नूर सोहागनियों, इस्क प्याला ले।
क्यों बरनों मैं इन जुबां, ए जो भर भर सबको दे॥ ९६ ॥

काजी श्री प्राणनाथजी महाराज अपनी अंगनाओं को इश्क के प्याले भर-भरकर पिला रहे हैं। उनका वर्णन मैं यहां की जबान से कैसे करूं?

नूर इस्क इन मद का, ए जो चढ़सी सबन।
ताए लेसी असलू नूर में, क्यों करे जुबां बरनन॥ ९७ ॥

इस नूर भरे इश्क की मस्ती का नशा सबको चढ़ेगा और इनको अखण्ड में ले लेंगे। इसका वर्णन इस जबान से कैसे करूं?

अर्स रूहें मोमिन, ए सब रूहें सोहागिन।
क्यों बरनू मैं इस्क इनका, ए जो रूह अल्ला के तन॥ ९८ ॥

अर्स की रूहें (मोमिन) सब सुहागिनी हैं, यह पारब्रह्म की अंगना हैं और श्यामाजी के तन हैं, तो उनके इश्क का वर्णन मैं इस जबान से कैसे करूं?

ए झूठी जिमी जो ख्वाब की, खाकी बुत सब रद।
ताए भी मद ऐसा चढ़या, जो लगे न काहू को सब्द॥ ९९ ॥

इस सपने के ब्रह्माण्ड के झूठे जीवों को भी ऐसी मस्ती चढ़ेगी, जिसका बखान करने के लिए शब्द नहीं हैं।

लिखे हरफ सारे कहे, ए जो लिखे हरफ नांहें।
अब सो ए करूं मैं जाहेर, जो रसूल के दिल मांहें॥ १०० ॥

श्री महामतिजी कहती हैं कि कुरान में जो शब्द लिखे हैं, उन सबकी हकीकत बता दी। मारफत की जो बातें कुरान में नहीं चढ़ीं (लिखीं), वह अब मैं जाहिर करती हूं। इन हरफों को बयान करने से रसूल साहब को रोक दिया था।

Nijanand App

ए जो रसूलें कानों सुने, पर लिखे नहीं फुरमान।
सो गुझ मोमिनों को देऊंगी, अर्स अजीम के निसान।। १०१ ।।

उन मारफत के वचनों को रसूल साहब ने कानों से सुना था (मेयराजनामा में लिखा है), किन्तु खुदा के हुकम से कुरान में नहीं लिखे। अब उन छिपी बातों को मैं मोमिनों को बताती हूं और अर्श अजीम के निशानों की पहचान कराती हूं।

क्यों वतन क्यों खसम, कौन ठौर क्यों नूर।
ए सेहेरग से देखे नजीक, जो मोमिन सदा हजूर।। १०२ ।।

घर कितनी दूर है, धनी कितनी दूर हैं, अक्षर कितनी दूर है और उसका कौन ठिकाना है—यह सभी मोमिनों के लिए शहेरग से नजदीक हैं।

दोऊ अर्स बका जाहेर किए, जबरूत नूर जलाल।
हादी रूहें लाहूत में, हक सूरत नूर जमाल।। १०३ ।।

दोनों अर्श जो अखण्ड हैं, अक्षर ब्रह्म का धाम (जबरूत) और लाहूत जहां श्यामा महारानी, रूहें और हक साक्षात् विराजमान हैं, जाहिर कर दिए।

अब कहूं हुकम की, जिनसे सब उतपत।
खेल फरिस्ते हुकमें हुए, हुकमें हुई कयामत।। १०४ ।।

अब मैं उस हुकम का वर्णन करती हूं जिससे सारी सृष्टि बनी, फरिश्ते बने और खेल बना। हुकम से ही उनकी कायमी हुई।

हुकमें झूठे सांच कर, ताए सुख दिए नेहेचल।
अब हुकम कजामें न आवहीं, पर तो भी कहूं नेक बल।। १०५ ।।

हुकम ने ही झूठे संसार के जीवों को अखण्ड करके सच्चे सुख दिए। अब यह हुकम इतना महान् है कि न्याय में नहीं आएगा, परन्तु फिर भी इसकी शक्ति का थोड़ा वर्णन करती हूं।

|| प्रकरण || ३७ || चौपाई || १४०० ||

सनन्ध—हुकम की

हुकमें परदा उड़ाइया, कर देऊं सब पेहेचान।
तुमसों गोसे बैठ के, देऊंगी सब निसान।। १ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने अज्ञानता का परदा हटा दिया है। अब मैं उसकी पूरी पहचान तुम्हें कराती हूं। मैं एकान्त में बैठकर तुमको घर के सारे निशान बताती हूं।

हुकमें बात वतन की, जो है गुझ खसम।
गोसे तुमको कहूंगी, जो हुआ मुझे हुकम।। २ ।।

हुकम ने घर की और खसम की गुझ (गुप्त) बातें मुझे बता दी हैं। मुझे हुकम हुआ है कि तुम्हें एकान्त में बैठकर बताऊं।

निसान बका हक अर्स के, सो सब देऊंगी तुम।
पर पेहेले नेक ए कहूं, जो तुम वास्ते हुआ हुकम।। ३ ।।

अखण्ड घर, धनी की पहचान करने की सब हकीकत तुमको बताऊंगी, परन्तु थोड़ा-सा हुकम का बयान करती हूं जो तुम्हारे वास्ते धनी ने किया था।

Nijanand App